International Journal of Sociology and Humanities

ISSN Print: 2664-8679
ISSN Online: 2664-8687
Impact Factor: RJIF 8.33
IJSH 2025; 7(2): 197-201
www.sociologyjournal.net
Received: 19-08-2025
Accepted: 22-09-2025

विजया
शोधार्थी, भास्कर जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

डॉ. उमेश कुमार
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, जनसंचार एंव नव मीडिया विभाग, जम्मू केन्द्रीय विश्विद्यालय, जम्मू, जम्मू और कश्मीर, भारत।

Corresponding Author:
विजया
शोधार्थी, भास्कर जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

बच्चों के सामाजिक संबंधों और व्यवहार पर भारतीय फिल्मों का प्रभाव: एक अध्ययन

विजया, उमेश कुमार

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26648679.2025.v7.i2c.203

सारांश
भारतीय फ़िल्मों का बच्चों के सामाजिक संबंधों और व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जो उनकी धारणाओं, संचार कौशल और समाजीकरण पैटर्न को आकार देता है। भारत में रंगीन और गतिशील कहानी अक्सर विभिन्न प्रकार के चरित्र, सांस्कृतिक मानदंड और सामाजिक परिदृश्य प्रस्तुत करती है, जिन्हें बच्चे अपने दैनिक जीवन में आत्मसात और अनुकरण करते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य बच्चों के सामाजिक संबंधों पर भारतीय फ़िल्मों के प्रभाव का पता लगाना है, यह जाँचना कि फ़िल्म के पात्र, कथाएँ और विषय परिवार और सहकर्मी समूह दोनों में उनके सम्बन्ध को कैसे प्रभावित करते हैं। भारतीय फ़िल्में अक्सर परिवार के सदस्यों, दोस्तों और सामाज की भूमिकाओं के मध्य संबंधों को दर्शाती हैं, जिन्हें बच्चे अपने रिश्तों में आत्मसात और प्रतिबिंबित करते हैं। इसके अतिरिक्त, फ़िल्मों में दिखाए गए भावनात्मक अनुभव, जैसे कि प्रेम, संघर्ष और सुलह, बच्चों को वास्तविक जीवन की स्थितियों में संवाद करने और संघर्षों को हल करने का तरीका सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शोध आगे जाँच करता है कि बॉलीवुड फ़िल्मों में सामाजिक मानदंडों, लैंगिक भूमिकाओं और नैतिक पाठों का चित्रण बच्चों की उचित व्यवहार की कल्पना को कैसे विकसित करता है। विभिन्न बॉलीवुड शैलियों के संपर्क में आने वाले बच्चों में व्यवहारिक बदलावों का विश्लेषण करके, यह अध्ययन बचपन के विकास पर लोकप्रिय मीडिया के व्यापक प्रभाव पर ध्यान केन्द्रित करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य माता-पिता, शिक्षकों और नीति निर्माताओं को बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक विकास पर मीडिया उपभोग के प्रभाव के बारे में जानकारी देना है।

शब्द-कुंजी : भारतीय फिल्म, बॉलीवुड, फ़िल्में, बच्चे, सामाजिक संबंध, व्यवहार, मीडिया प्रभाव।

प्रस्तावना
भारत के संपन्न फिल्म उद्योग बॉलीवुड का देश के सांस्कृतिक और सामाजिक परिदृश्य पर गहरा प्रभाव है। अपनी जीवंत कहानी, संगीत और समृद्ध चरित्र चित्रण के साथ, बॉलीवुड फ़िल्में अक्सर बच्चों के जीवन का एक केंद्रीय हिस्सा बन जाती हैं, जो उनकी धारणाओं, मूल्यों और व्यवहारों को आकार देती हैं। बच्चे, अत्यधिक प्रभावशाली और उत्सुक पर्यवेक्षक होने के कारण, इन फ़िल्मों में दर्शाए गए विषयों, पात्रों और सामाजिक गतिशीलता के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं (Khattri, 2021)[1]। चूँकि वे अक्सर सामाजिक मानदंडों, पारिवारिक भूमिकाओं, लैंगिक अपेक्षाओं और नैतिक दुविधाओं को दर्शाते हैं, इसलिए बॉलीवुड फ़िल्में बच्चों को व्यवहार के मॉडल और दूसरों के साथ बातचीत के आधार प्रदान करती हैं। बच्चों के सामाज से संबंधों पर बॉलीवुड फ़िल्मों का प्रभाव बहुआयामी है। फ़िल्में अक्सर पारिवारिक रिश्तों से लेकर दोस्ती तक की एक विस्तृत श्रृंखला को दर्शाती हैं, और संघर्षों को सुलझाने, भावनाओं को संभालने और सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के लिए विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं (Deakin & Bhugra, 2012)[2]। ये चित्रण इस बात को प्रभावित कर सकते हैं कि बच्चे साथियों, भाई-बहनों और अधिकार रखने वाले लोगों के साथ कैसे जुड़ते हैं। उदाहरण के लिए, परिवार के सदस्यों के बीच जिस तरह से प्यार, सम्मान और अधिकार को दर्शाया जाता है, उसका असर इस बात पर पड़ सकता है कि बच्चे अपने परिवार में कैसे संवाद करते हैं और कैसे व्यवहार करते हैं। इसी तरह, दोस्ती की गतिशीलता और साथियों के दबाव का चित्रण इस बात को प्रभावित कर सकता है कि बच्चे कैसे रिश्ते बनाते हैं और स्कूल और अन्य सेटिंग्स में सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हैं। बॉलीवुड फ़िल्में बच्चों के लिए सामाजिक मानदंडों को सीखने और आत्मसात करने का माध्यम भी बनती हैं।

[1] Khattri, A. S. Dr. N. (2021). Role of Bollywood Cinema in Shaping Youngerstersfor Social Awareness. In Psychology and Education Journal (Vol. 58, Issue 2, p. 6243). https://doi.org/10.17762/pae.v58i2.3145
[2] Deakin, N., & Bhugra, D. (2012). Families in Bollywood cinema: changes and context. International review of psychiatry, 24(2), 166-172

वे बच्चों को सामाजिक अपेक्षाओं, लैंगिक भूमिकाओं और नैतिक मूल्यों के बारे में सिखाती हैं, जिससे दूसरों के साथ उनकी बातचीत प्रभावित होती है (Rajagopalan, 2013)[3] । खुशी, उदासी और गुस्से जैसी भावनाओं के रंगीन और अक्सर नाटकीय चित्रण बच्चों को भावनात्मक अभिव्यक्ति को समझने और अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। हालाँकि, यह प्रभाव हमेशा सकारात्मक नहीं होता है, क्योंकि हिंसा, अवास्तविक आदर्शों या विषाक्त व्यवहारों का चित्रण भी नकारात्मक सामाजिक बातचीत और व्यवहार पैटर्न को आकार दे सकता है (Frankel, *et al*., 2012)[4]। माता-पिता, शिक्षकों और नीति निर्माताओं के लिए इन गतिशीलता को समझना महत्वपूर्ण है ताकि बच्चों के मीडिया उपभोग को बेहतर ढंग से निर्देशित किया जा सके और स्वस्थ सामाक विकास को बढ़ावा दिया जा सके।

साहित्य समीक्षा

जबकि बच्चों पर बॉलीवुड के प्रभाव को गहन तौर से अपनाया जाता है, लेकिन उनके सामाजिक संपर्क और व्यवहार पर इसके प्रभाव की विशेष रूप से जांच करने वाले समर्पित विद्वानों के शोध सीमित हैं। मीडिया के प्रभाव, बाल विकास और भारतीय सांस्कृतिक अध्ययनों पर मौजूदा साहित्य एक शुरुआती बिंदु प्रदान करता है, लेकिन एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण अंतराल और जटिलताओं को प्रकट करता है। मीडिया प्रभाव अनुसंधान में अक्सर उद्धृत सामाजिक शिक्षण सिद्धांत, सुझाव देता है कि बच्चे मॉडलों को देखकर और उनका अनुकरण करके सीखते हैं (Huesmann & Taylor, 2006)[5]। बॉलीवुड, अपने नाटकीय आख्यानों और प्रतिष्ठित पात्रों के साथ, इस तरह के सीखने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। हालाँकि, इस सिद्धांत को लागू करने से मीडिया संदेशों की व्याख्या करने और बातचीत करने में बच्चों की सक्रिय भूमिका को अनदेखा कर दिया जाता है (Abrol, Khan & Shrivastva, 1993)[6]। बच्चे जो कुछ भी देखते हैं उसे निष्क्रिय रूप से अवशोषित नहीं करते हैं; उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक वातावरण और व्यक्तिगत अनुभव इस बात को प्रभावित करते हैं कि वे सिनेमाई चित्रण कैसे संसाधित करते हैं । बाल विकास पर अध्ययन संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक कौशल को आकार देने में सामाजिक संपर्क के महत्व को उजागर करते हैं। बॉलीवुड फ़िल्में, सामाजिक रिश्तों के अपने विविध चित्रणों के साथ, बच्चों की सामाजिक भूमिकाओं और संचार पैटर्न की समझ को प्रभावित कर सकती हैं (Guru, 2013)[7] । हालाँकि, एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण के लिए चित्रित सामाजिक अंतःक्रियाओं के प्रकारों की जाँच करना आवश्यक है। क्या वे मुख्य रूप से पदानुक्रमित हैं, पारंपरिक शक्ति गतिशीलता को सुदृढ़ करते हैं? क्या वे रचनात्मक संघर्ष समाधान या आक्रामकता को बढ़ावा देते हैं? बॉलीवुड और पहचान पर कावूरी और जोसेफ का काम (Roy, 1998)[8] इन चित्रणों का विश्लेषण करने के लिए शुरूआती आंकड़े प्रदान करता है। इसके अलावा, भारतीय अध्ययनों पर शोध उस विशिष्ट संदर्भ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जिसमें बॉलीवुड के विचारधारा को ग्रहण किया जाता है। भारतीय संस्कृति में पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक सद्भाव पर जोर अक्सर बॉलीवुड कथाओं में अभिव्यक्ति पाता है। हालाँकि, एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण के लिए यह जाँच करना आवश्यक है कि किसके मूल्यों का प्रतिनिधित्व किया जा रहा है और किसके हाशिए पर हैं। फ़िल्में अक्सर प्रमुख विचारधाराओं को मजबूत करती हैं, संभावित रूप से अल्पसंख्यक समूहों को बाहर करती हैं या गलत तरीके से प्रस्तुत करती हैं। बॉलीवुड में मुसलमानों के प्रतिनिधित्व पर इस्लाम का काम(Islam, 2007)[9] इस आलोचनात्मक दृष्टिकोण का उदाहरण है । अंततः, बॉलीवुड के प्रभाव की अधिक सूक्ष्म समझ के लिए ऐसे शोध की आवश्यकता है जो सरलीकृत कारण-और-प्रभाव मॉडल से आगे बढ़े। गुणात्मक तरीकों का उपयोग करने वाले अध्ययन, जैसे नृवंशविज्ञान अनुसंधान या बच्चों के साथ फ़ोकस समूह, बॉलीवुड फिल्मों की उनकी व्याख्याओं और उनके सामाजिक संबंधों पर उनके प्रभाव के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार के शोध में माता-पिता की मध्यस्थता, साथियों का प्रभाव और व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ सहित विभिन्न कारकों के परस्पर प्रभाव पर भी विचार किया जाना चाहिए। आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर, हम बच्चों के सामाजिक विकास पर बॉलीवुड के जटिल और बहुआयामी प्रभाव की अधिक व्यापक और सूक्ष्म समझ की ओर बढ़ सकते हैं।

डाटा स्रोत एवं शोध प्राविधि

यह अध्ययन बच्चों के सामाजिक संपर्क और व्यवहार पर बॉलीवुड फिल्मों के प्रभाव की जांच करने के लिए द्वितीयक डेटा विश्लेषण दृष्टिकोण का उपयोग करता है। मौजूदा डेटासेट का उपयोग करके, शोध प्राथमिक डेटा संग्रह की आवश्यकता के बिना इस घटना का पता लगाता है। अध्ययन में विश्लेषण किए गए प्रमुख डेटा स्रोतों में शामिल हैं: मौजूदा शैक्षणिक साहित्य: मीडिया प्रभाव, बाल विकास और भारतीय सांस्कृतिक अध्ययनों से संबंधित विद्वानों के लेखों, पुस्तकों और रिपोर्टों की व्यापक समीक्षा की गई। इस साहित्य ने अध्ययन के लिए एक सैद्धांतिक रूपरेखा और प्रासंगिक पृष्ठभूमि प्रदान की, जिसमें विषय पर मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टिकोण शामिल थे । बॉलीवुड फिल्मों का कंटेंट विश्लेषण: लोकप्रिय बॉलीवुड फिल्मों, विशेष रूप से युवा दर्शकों को लक्षित करने वाली या बाल पात्रों वाली फिल्मों का व्यवस्थित विश्लेषण किया गया । यह विश्लेषण बच्चों के व्यवहार और बातचीत को प्रभावित करने वाले आवर्ती विषयों, चरित्र चित्रण और सामाजिक गतिशीलता की पहचान करने पर केंद्रित था । फिल्म दर्शकों की संख्या पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध डेटा: बच्चों के बीच विशिष्ट बॉलीवुड फिल्मों की लोकप्रियता और स्वागत का आकलन करने के लिए बॉक्स ऑफिस रिपोर्ट, फिल्म समीक्षा और सोशल मीडिया चर्चाओं के डेटा की जांच की गई। इस डेटा ने बच्चों के सामाजिक व्यवहार और बातचीत पर इन फिल्मों के संभावित प्रभाव को प्रासंगिक बनाने में मदद की।

शोध उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बॉलीवुड फिल्मों के बच्चों के सामाजिक इंटरएक्शन और व्यवहार पर प्रभाव का विश्लेषण करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित किया गया है जिसमें बॉलीवुड फिल्मों में दिखाए गए पारिवारिक और सामाजिक संबंधों का बच्चों के व्यवहार पर प्रभाव, बॉलीवुड फिल्मों में व्यक्तित्व और चरित्र चित्रण का बच्चों के सामाजिक कौशल पर प्रभाव, सामाजिक मूल्यों और नैतिकता का बच्चों पर प्रभाव, बॉलीवुड फिल्मों में दिखाए गए संघर्ष और समाधान के प्रकार का बच्चों

[3] Rajagopalan, J. (2013). Heal the World, Make It a Better Place: Social and Individual Hope in Indian Children's Cinema. In Bookbird/Book bird (Vol. 51, Issue 1, p. 10). Johns Hopkins University Press. https://doi.org/10.1353/bkb.2013.0020

[4] Frankel, M., Rachlin, H., & Yip-Bannicq, M. (2012). How nondirective therapy directs: The power of empathy in the context of unconditional positive regard. Person-Centered & Experiential Psychotherapies, 11(3), 205-214.

[5] Huesmann, L. R., & Taylor, L. D. (2006). The role of media violence in violent behavior. Annual review of public health, 27(1), 393-415.

[6] Abrol, U., Khan, N., & Shrivastva, P. (1993). Role of parents in children's television viewing. Childhood, 1(4), 212-219.

[7] Guru, B. P. M. C. (2013). Role of Television in Child Development. In Journal of Mass Communication and Journalism (Vol. 3, Issue 3). OMICS Publishing Group. https://doi.org/10.4172/2165-7912.1000153

[8] Roy, A. (1998). Images of Domesticity and Motherhood in Indian Television Commercials: A Critical Study. In The Journal of Popular Culture (Vol. 32, Issue 3, p. 117). Wiley. https://doi.org/10.1111/j.0022-3840.1998.3203_117.x

[9] Islam, M. (2007). Imagining Indian Muslims: Looking through the Lens of Bollywood Cinema. In Indian Journal of Human Development (Vol. 1, Issue 2, p. 403). SAGE Publishing. https://doi.org/10.1177/0973703020070208

के व्यवहार पर असर, एवं बॉलीवुड फिल्मों का बच्चों की सामाजिक पहचान और लिंग आधारित संवाद पर प्रभाव शामिल हैं।

विश्लेषण

बॉलीवुड फिल्मों में दिखाए गए पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों का बच्चों के व्यवहार पर प्रभाव

बॉलीवुड फिल्में अक्सर जटिल पारिवारिक गतिशीलता, दोस्ती और सामाजिक रिश्तों को दर्शाती हैं, जो बच्चों के सामाजिक व्यवहार को गहराई से प्रभावित करती हैं। इन फिल्मों में किरदार अक्सर रोल मॉडल के रूप में काम करते हैं, जो बच्चों को उनके परिवार के सदस्यों, साथियों और अधिकार वाले लोगों के साथ बातचीत करने के तरीके को आकार देते हैं (Rai *et al.*, 2024)[10]। उदाहरण के लिए, बॉलीवुड फिल्में जो मजबूत पारिवारिक बंधन, माता-पिता और बच्चों के बीच आपसी सम्मान और सहायक दोस्ती दिखाती हैं, वे बच्चों को उनके वास्तविक जीवन में समान मूल्यों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं (Deakin & Bhugra, 2012)[11]। इसके विपरीत, ऐसी फिल्में जो अव्यवस्थित परिवारों या विषाक्त संबंधों पर जोर देती हैं, ऐसे व्यवहारों को सामान्य बना सकती हैं, जिससे संभावित रूप से बच्चे अपने जीवन में इन अस्वस्थ गतिशीलता को दोहरा सकते हैं (Lv, 2018)[12]। ये सिनेमाई चित्रण न केवल बच्चों के संचार पैटर्न को प्रभावित करते हैं, बल्कि यह भी प्रभावित करते हैं कि वे संघर्षों को कैसे हल करते हैं और पारिवारिक और सामाजिक सेटिंग्स में भावनाओं को कैसे प्रबंधित करते हैं।

बॉलीवुड फिल्मों में चरित्र चित्रण और व्यक्तित्व चित्रण का बच्चों के सामाजिक कौशल पर प्रभाव

बॉलीवुड फिल्मों में अक्सर विभिन्न व्यक्तित्व लक्षणों और व्यवहारों वाले विभिन्न प्रकार के चरित्र होते हैं, जिनमें मुखर नेताओं से लेकर शर्मीले अंतर्मुखी, नायक से लेकर खलनायक तक शामिल होते हैं। बच्चे इन पात्रों के सामाजिक व्यवहार और संचार शैलियों की नकल करते हैं, जिसका उनके सामाजिक कौशल पर स्थायी प्रभाव पड़ सकता है (Fernie, 1981)[13]। उदाहरण के लिए, बच्चे फिल्मों में सकारात्मक पात्रों को सहयोग करते, बातचीत करते और समस्याओं का समाधान करते देखकर प्रभावी संचार और टीम वर्क सीख सकते हैं (Maldonado & Winick, 2000)[14]। दूसरी ओर, जो चरित्र आक्रामकता या स्वार्थ जैसे नकारात्मक लक्षण प्रदर्शित करते हैं, वे बच्चों को कम वांछनीय सामाजिक व्यवहार अपनाने के लिए प्रभावित कर सकते हैं (Khattri, 2021)[15]। इन पात्रों के संवाद, कार्य और संघर्ष समाधान रणनीतियाँ बच्चों को रिश्तों को प्रबंधित करने, टीम वर्क और आत्म-अभिव्यक्ति के बारे में सबक देती हैं।

बॉलीवुड फिल्मों में दिखाए गए सामाजिक मूल्यों और नैतिकता का बच्चों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव

बॉलीवुड फिल्में सांस्कृतिक मूल्यों और नैतिक पाठों से भरपूर हैं, जिनका उद्देश्य बच्चों को ईमानदारी, दया, सम्मान और न्याय जैसे महत्वपूर्ण जीवन सिद्धांत सिखाना है। बच्चे अक्सर इन पाठों को आत्मसात कर लेते हैं और उन्हें अपने जीवन में लागू करते हैं। फिल्मों में सही और गलत, अच्छाई बनाम बुराई और नैतिक विकल्पों का चित्रण बच्चों को सामाजिक मानदंडों और नैतिक व्यवहार को समझने में मार्गदर्शन करता है (Khattri, 2021)[16]। उदाहरण के लिए, ऐसी फिल्में जो बड़ों का सम्मान करने या निष्पक्षता को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर देती हैं, वे बच्चों को उनके वास्तविक जीवन की बातचीत में इन मूल्यों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं (Gehman *et al.*, 2021)[17]। हालाँकि, ऐसी फ़िल्में जो अनैतिक व्यवहार के परिणामों पर ज़ोर देने में विफल रहती हैं या अवास्तविक नैतिक पाठों को दर्शाती हैं, वे बच्चों को समाज में स्वीकार्य चीज़ों के बारे में विकृत दृष्टिकोण रखने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

बॉलीवुड फिल्मों में संघर्ष और समाधान के चित्रण का बच्चों के व्यवहार पर प्रभाव

संघर्ष और उसका समाधान बॉलीवुड फिल्मों में केंद्रीय विषय हैं, जो बच्चों को अपने जीवन में विवादों को संभालने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं। फ़िल्मों में अक्सर किरदारों को चुनौतियों, संघर्षों और भावनात्मक उथल-पुथल का सामना करते हुए दिखाया जाता है, जिसके बाद समाधान होता है जो सद्भाव को बहाल करता है। बच्चे संघर्षों को प्रबंधित करना और हल करना सीखते हैं, यह देखकर कि किरदार इन स्थितियों से कैसे निपटते हैं (Johnson & Rudy, 1990)[18]। संघर्ष समाधान के सकारात्मक चित्रण, जैसे कि सम्मानजनक संचार, समझौता और सहानुभूति, बच्चों को असहमति से निपटने के रचनात्मक तरीके सिखा सकते हैं (Kapadia & Miller, 2005)[19]। हालाँकि, जब फ़िल्में आक्रामकता, छल या हिंसा के माध्यम से संघर्ष समाधान को दर्शाती हैं, तो बच्चे ऐसे व्यवहारों को स्वीकार्य मान सकते हैं, जिससे उनके अपने रिश्तों में अस्वास्थ्यकर संघर्ष समाधान रणनीतियाँ बन सकती हैं।

बच्चों की सामाजिक पहचान और लिंग-आधारित संचार पर बॉलीवुड फ़िल्मों का प्रभाव

बॉलीवुड फ़िल्में बच्चों की सामाजिक पहचान और लिंग भूमिकाओं की समझ को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बॉलीवुड में पुरुष और महिला पात्रों का चित्रण अक्सर पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को पुष्ट करता है, जिसमें पुरुषों को मुखर और प्रभावशाली के रूप में दर्शाया जाता है, जबकि महिलाओं को पोषण करने वाली या विनम्र के रूप में चित्रित किया जा सकता है (Anuradha

---

[10] Rai, S., Zaveri, K. Z., Havaldar, S., Nema, S., Ungar, L., & Guntuku, S. C. (2024). A Cross-Cultural Analysis of Social Norms in Bollywood and Hollywood Movies. In arXiv (Cornell University). Cornell University. https://doi.org/10.48550/arxiv.2402.11333

[11] Deakin, N., & Bhugra, D. (2012). Families in Bollywood cinema: changes and context. International review of psychiatry, 24(2), 166-172.

[12] Lv, M. (2018). On Family Tradition and Education and Cultivation of Teenagers' Values. In Proceedings of the 2018 3rd International Conference on Education, Elearning and Management Technology (EEMT 2018). https://doi.org/10.2991/iceemt-18.2018.120

[13] Fernie, D. E. (1981). Ordinary and extraordinary people: Children's understanding of television and real life models. In New Directions for Child and Adolescent Development (Vol. 1981, Issue 13, p. 47). Wiley.

[14] Maldonado, N. S., & Winick, M. P. (2000). Films/Videos: Films/Videos/DVDs: The Current Children's Crop. In Childhood Education (Vol. 77, Issue 1, p. 59). Taylor & Francis. https://doi.org/10.1080/00094056.2000.10522144

[15] Khattri, A. S. Dr. N. (2021). Role of Bollywood Cinema in Shaping Youngerstersfor Social Awareness. In Psychology and Education Journal (Vol. 58, Issue 2, p. 6243). https://doi.org/10.17762/pae.v58i2.3145

[16] Khattri, AS. Dr. N (2021). Role of Bollywood Cinema in Shaping Youngerstersfor Social Awareness. In Psychology and Education Journal (Vol. 58, Issue 2, p. 6243). https://doi.org/10.17762/pae.v58i2.3145

[17] Gehman, R., Guglielmo, S., & Schwebel, D. C. (2021). Moral foundations theory, political identity, and the depiction of morality in children's movies. In PLoS ONE (Vol. 16, Issue 3). Public Library of Science. https://doi.org/10.1371/journal.pone.0248928

[18] Johnson ML, & Rudy C. (1990). Teaching children to resolve conflicts cooperatively. In Journal of Pediatric Health Care (Vol. 4, Issue 5, p. 237). Elsevier BV. https://doi.org/10.1016/0891-5245(90)90107-h

[19] Kapadia, S., Miller, JG. (2005). Parent–Adolescent Relationships in the Context of Interpersonal Disagreements. In Psychology and Developing Societies (Vol. 17, Issue 1, p. 33). SAGE Publishing.

& Subbaram, 2023)[20]। ये चित्रण इस बात को प्रभावित करते हैं कि बच्चे अपनी सामाजिक पहचान और समाज में उनसे अपेक्षित भूमिकाओं को कैसे समझते हैं। बच्चे इन लिंग मानदंडों के आधार पर संचार शैली अपना सकते हैं, जिसमें लड़के मुखरता और प्रभुत्व की नकल करते हैं, और लड़कियाँ पोषण या निष्क्रिय व्यवहार प्रदर्शित करती हैं (Carter, 2014)[21]। हालाँकि, अधिक प्रगतिशील फ़िल्में जो इन पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को चुनौती देती हैं, ऐसे चरित्र प्रस्तुत करती हैं जो सामाजिक मानदंडों को तोड़ते हैं, बच्चों को लिंग भूमिकाओं और संचार शैलियों के बारे में अधिक संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं (Calvert *et al*., 2003)[22]। ये फ़िल्में बच्चों को गैर-रूढ़िवादी व्यवहार अपनाने और लिंगों के बीच अधिक खुले और सम्मानजनक संचार में संलग्न होने के लिए सशक्त बना सकती हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में, बॉलीवुड फ़िल्में बच्चों के सामाजिक संबंधों और व्यवहार पर बहुआयामी प्रभाव डालती हैं। पारिवारिक गतिशीलता और सामाजिक संबंधों से लेकर व्यक्तित्व विकास और नैतिक मूल्यों तक, ये फ़िल्में मनोरंजन और समाजीकरण का एक शक्तिशाली मिश्रण पेश करती हैं। बच्चे अक्सर स्क्रीन पर दिखने वाले पात्रों की नकल करते हैं, उनकी संवाद शैली, संघर्ष समाधान रणनीतियों और यहाँ तक कि लैंगिक व्यवहार को भी आत्मसात करते हैं। जबकि बॉलीवुड अक्सर पारंपरिक मूल्यों और सामाजिक मानदंडों को पुष्ट करता है, इसका प्रभाव एकसमान नहीं होता है। बच्चे इन संदेशों की सक्रिय रूप से व्याख्या करते हैं और उन पर बातचीत करते हैं, उन्हें अपने सांस्कृतिक और व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से छानते हैं। हालाँकि, सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों की संभावना बॉलीवुड की सामग्री के साथ आलोचनात्मक जुड़ाव की आवश्यकता को रेखांकित करती है। सहानुभूति, सम्मान और सहयोग जैसे सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देने वाली फ़िल्में बच्चों के सामाजिक विकास को सकारात्मक रूप से आकार दे सकती हैं। इसके विपरीत, हिंसा, भेदभाव या अस्वस्थ संबंधों को दर्शाने वाली फ़िल्में समस्याग्रस्त व्यवहार को सामान्य बना सकती हैं। माता-पिता, शिक्षक और फ़िल्म निर्माता समान रूप से मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देने और बच्चों को उनके सामने आने वाले संदेशों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित करने की ज़िम्मेदारी साझा करते हैं। बॉलीवुड के उपभोग के प्रति विवेकपूर्ण दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर, हम इसके संभावित नुकसानों को कम करते हुए सकारात्मक सामाजिक प्रभाव के लिए इसकी क्षमता का दोहन कर सकते हैं। बच्चों की सामाजिक दुनिया को आकार देने में बॉलीवुड की जटिल भूमिका को पूरी तरह से समझने के लिए व्यक्तिगत, सांस्कृतिक और सिनेमाई कारकों के बीच सूक्ष्म अंतरसंबंध की खोज करने वाला आगे का शोध महत्वपूर्ण है।

References

1. Abrol U, Khan N, Shrivastva P. Role of parents in children's television viewing. Childhood. 1993;1(4):212-219.
2. Anuradha M, Subbaram K. Gender role constructs of boys and girls in television commercials aimed at children: A comparative analysis. ShodhKosh J Vis Perform Arts. 2023;4(1). https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i1se.2023.418
3. Calvert SL, Kotler JA, Zehnder SM, Shockey EM. Gender stereotyping in children's reports about educational and informational television programs. Media Psychol. 2003;5(2):139-154. https://doi.org/10.1207/s1532785xmep0502_2
4. Carter M. Gender socialization and identity theory. Soc Sci. 2014;3(2):242-263. https://doi.org/10.3390/socsci3020242
5. Deakin N, Bhugra D. Families in Bollywood cinema: Changes and context. Int Rev Psychiatry. 2012;24(2):166-172.
6. Fernie DE. Ordinary and extraordinary people: Children's understanding of television and real life models. New Dir Child Adolesc Dev. 1981;1981(13):47-58. https://doi.org/10.1002/cd.23219811305
7. Frankel M, Rachlin H, Yip-Bannicq M. How nondirective therapy directs: The power of empathy in the context of unconditional positive regard. Person-Centered Exp Psychother. 2012;11(3):205-214.
8. Gehman R, Guglielmo S, Schwebel DC. Moral foundations theory, political identity, and the depiction of morality in children's movies. PLOS One. 2021;16(3):e0248928. https://doi.org/10.1371/journal.pone.0248928
9. Guru BPMC. Role of television in child development. J Mass Commun J. 2013;3(3). https://doi.org/10.4172/2165-7912.1000153
10. Huesmann LR, Taylor LD. The role of media violence in violent behavior. Annu Rev Public Health. 2006;27(1):393-415.
11. Islam M. Imagining Indian Muslims: Looking through the lens of Bollywood cinema. Indian J Hum Dev. 2007;1(2):403-18. https://doi.org/10.1177/0973703020070208
12. Johnson ML, Rudy C. Teaching children to resolve conflicts cooperatively. J Pediatr Health Care. 1990;4(5):237-42. https://doi.org/10.1016/0891-5245(90)90107-H
13. Kapadia S, Miller JG. Parent-adolescent relationships in the context of interpersonal disagreements. Psychol Dev Soc. 2005;17(1):33-50. https://doi.org/10.1177/097133360501700103
14. Khattri AS, Dr N. Role of Bollywood cinema in shaping youngsters for social awareness. Psychol Educ J. 2021;58(2):6243-51. https://doi.org/10.17762/pae.v58i2.3145
15. Lv M. On family tradition and education and cultivation of teenagers' values. In: Proc 3rd Int Conf Educ E-Learn Manag Technol (EEMT); 2018. https://doi.org/10.2991/iceemt-18.2018.120
16. Maldonado NS, Winick MP. Films/videos/DVDs: The current children's crop. Child Educ. 2000;77(1):59-61. https://doi.org/10.1080/00094056.2000.10522144
17. Rai S, Zaveri KZ, Havaldar S, Nema S, Ungar L, Guntuku SC. A cross-cultural analysis of social norms in Bollywood and Hollywood movies. arXiv [Preprint]. 2024. https://doi.org/10.48550/arxiv.2402.11333

[20] Anuradha, M., & Subbaram, K. (2023). Gender Role Constructs Of Boys And Girls In Television Commercials Aimed At Children-A Comparative Analysis. In ShodhKosh Journal of Visual and Performing Arts (Vol. 4, Issue 1). https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i1se.2023.418

[21] Carter, M. (2014). Gender Socialization and Identity Theory. In Social Sciences (Vol. 3, Issue 2, p. 242). Multidisciplinary Digital Publishing Institute. https://doi.org/10.3390/socsci3020242

[22] Calvert, S. L., Kotler, J. A., Zehnder, S. M., & Shockey, E. M. (2003). Gender Stereotyping in Children's Reports About Educational and Informational Television Programs. In Media Psychology (Vol. 5, Issue 2, p. 139). Taylor & Francis. https://doi.org/10.1207/s1532785xmep0502_2

18. Rajagopalan J. Heal the world, make it a better place: Social and individual hope in Indian children's cinema. Bookbird. 2013;51(1):10-17. https://doi.org/10.1353/bkb.2013.0020
19. Roy A. Images of domesticity and motherhood in Indian television commercials: A critical study. J Pop Cult. 1998;32(3):117-35. https://doi.org/10.1111/j.0022-3840.1998.3203_117.x